परिशिष्ट-२

-: आधार ग्रन्थ (आचार्य प्रवरश्रीके ग्रन्थ)की सूची :-

क्रम	पुस्तकका नाम	संपादक / अनुवादक	रचनास्थान	रचना वर्ष	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशक	संस्करण
१	अज्ञान तिमिर भास्कर	श्री आत्मानद जैन सभा-भावनगर	अम्बाला-खभात	१९३९ १९४२	१९६२	श्री आत्मानद जैन सभा भावनगर	द्वितीय
२	ईसाई मत समीक्षा	-	पजाब		१९५६	जैन ज्ञान प्रसारक मडल, बम्बई	प्रथम
३	चतुर्थ स्तुति निर्णय भाग १	भीमसिंह माणेकजी	राधनपुर	१९४४	१९४४	भीमसिंह माणेकजी	प्रथम
४	चतुर्थ स्तुति निर्णय भाग २	-	पट्टी	१९४८	१९५२	महेसाणा श्री सघ	प्रथ
५	चिकागो प्रश्नोत्तर	जसवतराय जैन	अमृतसर	१९४९	१९६२	जसवतराव जैन, लाहौर	द्र
६	जैन तत्त्वादर्श	भीमसिंह माणेकजी	गुजरावाला होशियारपुर	१९३७-१९३८		भीमसिंहजी माणेकजी	द्वितीय
	जैन तत्त्वादर्श (गुजराती)	अनु वकील मूलचदजी ना			१९१६	श्री आत्मानद ज्ञान प्रचारक मडल	प्रथम
	जैन तत्त्वादर्श भाग १ (पूर्वार्ध)	सपा श्री आत्मानंद जैन सभा, बम्बई			२०११	श्री आत्मानद जैन सभा-भावनगर	पंचम
	जैन तत्त्वादर्श (खड़ीबोली)	सपा श्री पुण्यपाल सूरिजी म	-	-	२०४९	श्री पार्श्वाभ्युदय प्रकाशन	सप्तम्
७	जैनधर्म विषयक प्रश्नोत्तर रत्नावली	गिरधरलाल हीराभाई शेठ	पालनपुर	१९४५	१९६३	श्री आत्मानद जैन सभा, भावनगर	द्वितीय
८	जैन धर्मका स्वरूप	-	-	-	-	-	-
९	जैन मत वृक्ष (पुस्तकाकार)	सपा श्रीमद्विजय वल्लभ सुरीश्वरजी म	जडियालागुरु	१९४९	१९५६	श्री आत्मानद जैन सभा, पजाब	द्वितीय
	जैन मत वृक्ष (वृक्षाकार)	चित्रण-श्रीमद्विजय वल्लभ सुरीश्वरजी म	सुरत	१९४२	१९४८	श्री आत्मानद जैन सभा, पजाब	प्रथम
१०	तत्त्व निर्णय प्रासाद	सशो श्रीमद्विजय वल्लभ सुरीश्वरजी म	जीरा-गुजरावाला	१९५१ १९५३	१९५८	अमरचद पी परमार	प्रथम
११	नवतत्त्व (सक्षिप्त)						
१२	प्रश्नोत्तर सग्रह	सक मुनिश्री भक्तिविजयजी म सा	महेसाणा	१९४५	१९७२	श्री आत्म वीर सभा भावनगर	प्रथम
१३	बृहत नवतत्त्व सग्रह	हीरालाल रसिकलाल कापड़िया	बिनौली बड़ौत	१९२४-१९२५	१९८८	हीरालाल र कापड़िया	प्रथम
१४	सम्यक्त्व शल्योद्धार	-	अहमदाबाद	१९४१	१९६०	श्री आत्मानद जैन सभा, लाहौर	तृ
१५	आत्म भावनी (उपदेश भावनी)	श्रीमद्विजय वल्लभ सुरीश्वरजी म सा	बिनौली	१९२७	१९८८	हीरालाल २ कापड़िया	द्वितीय
१६	आत्मानद चौबीसी (जिन चौबीसी)		अबाला	१९३०	२००८	श्री आत्मानद जैन सभा, भावनगर	द्वितीय
१७	आत्म विलास स्तवनावली	(विविध स्तवन-पद-सज्झाय सग्रह)			१९९३	श्री सुमेमलजी सुराणा	द्वितीय
१८	आत्म विलास स्तवनावली	(विविध स्तवन-पद-सज्झाय सग्रह)		-	१९४५	खीमचद हीराचद दलाल	प्रथम
१९	ध्यान स्वरूप	(बृहत् नवतत्त्व सग्रह अतर्गत श्रीजिनभद्र गणि क्षमाश्रमण विरचित 'ध्यान शतक' ग्रन्थाधारित रचना पृ १७५ से १८२					
२०	बारह भावना स्वरूप	(बृहत नवतत्त्व सग्रह' अतर्गत रचना - पृ १६१ से १६४					
२१	विधि विधान सह पूजा सग्रह	अष्ट प्रकारी पूजा—स १९४३—पालीताना, नवपद पूजा—स १९४८—पट्टी, बीस स्थानकपूजा स १९४०—बीकानेर, सत्रहभेदी पूजा—स १९३९—अबाला, स्नात्रपूजा—स १९५० जड़ियाला			१९५६	श्री हसविजयजी जैन लाइब्रेरी	प्रथम
२२	श्री आत्म वल्लभ पूजा सग्रह	गुरु-इन पाच पूजाओका सग्रह)					

Appendix - २